श्रीकृष्ण की सब कथाएँ और वाक्य अमृतमय हैं। साधन करने से यह अमृत मन, वाणी, श्रवणपुटों के द्वारा वास्तव में अनुभव किया जा सकता है। लौकिक कथानकों को बार-बार सुनना अरुचिकर एवं श्रान्तिकर लगता है, पर श्रीकृष्णकथा के श्रवण से कभी तृप्ति नहीं होती, बारंबार सुनने की उत्कण्ठा बनी ही रहती है। यही आधुनिक कहानियों, उपन्यासों और इतिहास की तुलना में श्रीभगवान् के लीलामृत का अनुपम वैशिष्ट्य है। जगत् का इतिहास श्रीभगवान् के अवतारों की लीला-कथाओं से परिपूर्ण है। पुराणों में विशेष रूप से पूर्व युगों में हुए विविध भगवत्-अवतारों के लीलाविलास का विस्तृत विवरण है। इस प्रकार की दिव्य पठन सामग्री बार-बार आवृत्ति करने पर भी नित्य नूतन बनी रहती है।

श्रीभगवानुवाच।
हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः।
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे।।१९।।

श्रीभगवान् उवाच=श्रीभगवान् ने कहा; **हन्त**=अब; **ते**=तेरे प्रति; **कथयिष्यामि**=मैं कहूँगा; **दिव्याः**=दिव्य; **हि**=निःसन्देह; **आत्मविभूतयः**=अपने ऐश्वर्यों को; **प्राधान्यतः**=प्रधानता से; **कुरुश्रेष्ठ**=हे कौरवश्रेष्ठ अर्जुन; **न अस्ति**=नहीं है; **अन्तः**=सीमा; **विस्तरस्य**=विस्तार की; **मे**=मेरे।

अनुवाद

श्रीभगवान् ने कहा, अब मैं तेरे लिए अपनी नित्य विभूतियों को मुख्य रूप से कहूँगा, क्योंकि हे अर्जुन! मेरे ऐश्वर्य का अन्त नहीं है।।१९।।

तात्पर्य

श्रीकृष्ण और उनके ऐश्वर्यों की अनिर्वचनीय अतुल महिमा को हृदयंगम करना सम्भव नहीं है। जीव की दोषयुक्त इन्द्रियाँ श्रीकृष्ण की लीला को समग्र रूप से समझने में बाधा उपस्थित करती हैं। फिर भी भक्त श्रीकृष्ण को जानने के लिये प्रयत्नशील रहते हैं; परन्तु वे यह सोच कर चेष्टा नहीं करते कि किसी विशेष काल में अथवा जीवन की किसी अवस्था में वे श्रीकृष्ण पूर्णतया जान जायेंगे। श्रीकृष्ण की लीलाकथा अपने में इतनी आस्वाद्य है कि उन्हें अमृत सी लगती है। अतएव वे निरन्तर उस कथामृत में ही रमण किया करते हैं। श्रीकृष्ण के ऐश्वर्य और विभूतियों की वार्ता में शुद्धभक्त को वस्तुतः अलौकिक रस मिलता है। श्रीकृष्ण जानते हैं कि जीव उनके ऐश्वर्य के विस्तार की सीमा को नहीं जान सकते; अतः वे केवल अपनी प्रधान-प्रधान विभूतियों का वर्णन करने को सहमत हुए हैं। **प्राधान्यतः** शब्द में गम्भीर आशय है। हम असमर्थ जीव अनन्त रूपधारी श्रीभगवान् की कुछ एक प्रधान विभूतियों को ही जान सकते हैं। उनकी सम्पूर्ण विभूतियों को जान पाना हमारे लिए सम्भव नहीं। **विभूति** शब्द उन ऐश्वर्यों का वाचक है, जिनके द्वारा श्रीभगवान्